IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

श्रीगंगानगर एवं हनुमानगढ़ जिलों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति पर राजस्थान के मानव संसाधन विकास के प्रभावों का विश्लेषणात्मक विवेचन

डॉ. महावीर सिंह

भूगोल विभाग, कल्पना चावला कन्या पीजी कॉलेज, साहवा

सारांश

मानव विकास धारणा आर्थिक विकास के अब तक के स्थापित केवल आर्थिक वृद्धि के आयाम के बजाय शिक्षा, स्वास्थ्य और आय के समावेशी एकीकृत विकास की पक्षधर रही है। मानव विकास की व्यूह रचना के अनुसार प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि मानव विकास के लिए आवश्यक शर्त है, पर्याप्त नही। मानव विकास हेतु प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि के साथ स्वास्थ्य, शिक्षा एवं लोगों की बौद्धिक क्षमता का भी विकास होना चाहिए। मानव संसाधन विकास हेतु शिक्षा एवं स्वास्थ्य जैसे सामाजिक क्षेत्र में निवेश करने की आवश्यकता पर जोर दिया गया। साथ ही परिसम्पत्तियों एवं आय के वितरण में समानता, सुव्यवस्थित सार्वजनिक व्यय तथा आर्थिक विकास की प्रक्रिया में लोगों की भागीदारी को बढ़ाए जाने की भी आवश्यकता महसुस की गई। समसामयिक काल में मानव विकास ने आर्थिक वृद्धि को मानवीय गतिविधियों के केन्द्रीय उद्देश्य से प्रतिस्थापित किया है। प्रस्तुत शोध पत्र में मानव संसाधन विकास का हनुमानगढ़ एवं श्रीगंगानगर जिलों के सामाजिक–आर्थिक स्थिति पर प्रभाव का विश्लेषण किया गया। **संकेत शब्द** : मानव संसाधन विकास , सामाजिक स्थिति, आर्थिक स्थिति , आर्थिक विकास।

1. प्रस्तावना

मानव विकास से आशय विकास के लिए ऐसे वातावरण के निर्माण से है जिसमें लोग अपनी क्षमताओं में वृद्धि कर उत्पादकता बढ़ा सके एवं अपनी आवश्यकताओं एवं रूचियों के अनुरूप सृजनात्मक जीवनयापन कर सके। इसलिए कहा भी जाता है कि व्यक्ति ही राष्ट्र की वास्तविक पूँजी होते है। मानव विकास लोगों के लिए अवसरों को बढ़ाने, लोगों की स्वतन्त्रता और उनकी क्षमताओं के विस्तार के साथ मानवीय परिस्थितियों में सुधार कर जीवन को बेहतर करता है। मानव विकास का तात्पर्य यह भी है कि कैसे मानव अपने जीवन को समाजोपयोगी एवं मूल्यवान बनाकर अपनी क्षमताओं से स्वयं को राष्ट्र के लिए उपयोगी बना सकता है।

किसी राष्ट्र की जनता के शारीरिक और मानसिक क्षमताओं के योग को उस राष्ट्र का मानव संसाधन कहा जाता हैं। मानव संसाधन में किसी निश्चित इकाई क्षेत्र में रहने वाली मानव जनसंख्या के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, संगठनात्मक, वैज्ञानिक तथा तकनीकी जैसी विशेषताएं सम्मिलित होती हैं। मानव शारीरिक एवं मानसिक दोनों ही श्रम द्वारा आर्थिक क्रियाएं करता हैं। मानव प्राकृतिक तत्वों को अपने ज्ञान एवं कौशल द्वारा मूल्यवान संसाधन

रूप में तैयार करता है एवं स्वयं भी उपयोग करता हैं। अतः मानव संसाधन वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादक एवं उपभोक्ता दोनों होता हैं।

2. शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य हनुमानगढ़ एवं श्रीगंगानगर जिलों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति पर मानव संसाधन विकास के प्रभाव का विश्लेषण करना है। इस हेतु दोनों जिलों के निवासियों की शिक्षा एवं जीवन स्तर का विश्लेषण किया गया है।

3. शोध पद्धति

शोध पद्धति के अन्तर्गत अध्ययन क्षेत्र, समंक एवं उनका संकलन, प्रतिदर्श प्ररचना तथा प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधियॉ का संक्षिप्त विवरण नीचे दिया गया है।

(i) अध्ययन क्षेत्र : प्रस्तुत अध्ययन राजस्थान के उत्तर में स्थित श्रीगंगानगर एवं हनुमानगढ़ जिलों पर किया गया है। श्रीगंगानगर जिला राजस्थान के उत्तर में $28^0$40′ से 30^0 06′ उत्तरी अक्षांश एवं $72^0$39′ से $74^0$21′ पूर्वी देशान्तर के मध्य अवस्थित हैं। जिले का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 11154.66 वर्ग किमी. है जिसमें नौ तहसीलें है। जनगणना 2011 के अनुसार जिले की जनसंख्या 19,69,168 थी जिसमें 72.80 प्रतिशत ग्रामीण, जनघनत्व 179, लिंगानुपात 887 एवं साक्षरता दर 70.25 प्रतिशत है।

हनुमानगढ़ पूर्व में श्रीगंगानगर जिले की तहसील था जो 12.07.1994 को राजस्थान के 31वे जिले के रूप में अस्तित्व में आया। हनुमानगढ़ जिला राजस्थान के उत्तर में $29^0$5′ से $30^0$6′ उत्तरी अक्षांश एवं $74^0$3′ से $75^0$3′ पूर्वी देशान्तर के मध्य अवस्थित है। जिले का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 9656.09 वर्ग किमी. है जिसमें सात तहसीलें है। जनगणना 2011 के अनुसार जिले की जनसंख्या 17,74,692 थी जिसमें 80.25 प्रतिशत ग्रामीण, जनघनत्व 184, लिंगानुपात 906 एवं साक्षरता दर 67.13 प्रतिशत है।

(ii) प्रतिदर्श : प्रस्तुत शोध पत्र प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के समंकों पर आधारित है। प्राथमिक समंक अनुसूची के माध्यम से एकत्रित किए गए है। प्राथमिक समंक हेतु हनुमानगढ़ जिले की 7 में से 3 तहसीलों एवं श्रीगंगानगर जिले की 9 में से 3 तहसीलों के 5–5 गाँवों में प्रत्येक गाँव से 10–10 परिवारों से स्तरित यादृच्छिक प्रतिचयन द्वारा कुल 300 उत्तरदाताओं का चयन किया गया।

(iii) प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधियॉ : प्रस्तुत शोध पत्र में साक्षरता एवं जीवन स्तर के समंकों के विश्लेषण हेतु प्रतिशत का प्रयोग किया गया है जबकि मानव संसाधन एवं सामाजिक–आर्थिक स्थिति में साहचर्य हेतु परिकल्पना परीक्षण के अन्तर्गत काई–वर्ग परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

4. विश्लेषण एवं चर्चा

प्रस्तुत शोध पत्र में मानव संसाधन विकास का राजस्थान के हनुमानगढ़ एवं श्रीगंगानगर जिलों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति पर प्रभाव का विश्लेषण किया गया है। पहले मानव संसाधन विकास का जिलों की आर्थिक स्थिति पर प्रभाव एवं बाद में सामाजिक स्थिति पर प्रभाव देखा गया है।

(A) आर्थिक स्थिति

सामान्यतया किसी व्यक्ति के जीवन स्तर को मापने के लिए उसकी प्रति व्यक्ति आय, व्यय, खान–पान, रहन–सहन और मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति को सम्मिलित किया जाता है। प्रायः उस व्यक्ति के जीवन स्तर को उच्च माना जाता है जिसके पास रहने के लिए अच्छा मकान, दैनिक जीवन में काम आने वाले सभी आधुनिक साधन, पीने का स्वच्छ जल उपलब्ध, खाने में पर्याप्त मात्रा में कलौरी तथा अन्य विलासितापूर्ण वस्तुओं का आधिक्य हो। सर्वेक्षण के दौरान परिवारों ने बताया कि उनकी आय में तो पर्याप्त वृद्धि हुई है परन्तु उस वृद्धि के अनुरूप उनके जीवन स्तर में उतना सुधार नहीं हुआ है। परिवारों के जीवन स्तर में सुधार कम होने का मुख्य कारण उन्होंने बढ़ती हुई मंहगाई को बताया।

तालिका 1 : उत्तरदाता परिवारों के अनुसार जीवन स्तर सुविधाओं की स्थिति

क्र. सं.	उत्तरदाताओं के पास उपलब्ध साधन	परिवारों की श्रेणी				योग	प्रतिशत
		बीपीएल परिवार	निम्न आय वर्ग परिवार	मध्यम आय वर्ग परिवार	उच्च आय वर्ग परिवार		
1	कार / जीप	0	0	12	14	26	8.67
2	मोटरसाइकिल	0	8	46	50	104	34.60
3	पंखे / कुलर	15	45	154	62	276	92.00
4	फ्रिज	0	13	85	62	160	53.33
5	टेलिविजन	8	48	95	62	213	71.00
6	डीश एन्टिना	0	2	45	48	95	31.67
7	टेलिफोन / मोबाईल	2	46	155	62	265	88.33
8	गैस सिलेण्डर	0	8	85	62	155	51.67
9	पक्का मकान	0	16	145	62	223	74.33

स्त्रोत– प्राथमिक सर्वेक्षण से परिकलित।

प्रतिदर्श में चयनित उत्तरदाता परिवारों से व्यक्तिगत साक्षात्कार के समय दैनिक जीवन में उपयोग होने वाली आवश्यक एवं विलासिता की वस्तुओं के बारे में जानकारी प्राप्त की गई जो वस्तुएँ परिवारों के जीवन स्तर को प्रदर्शित करती है। अध्ययन में जिन परिवारों के पास उक्त आवश्यक एवं विलासिता की वस्तुऐं पायी गयी उनका जीवन स्तर तुलनात्मक रूप से उच्च माना गया है। प्रतिदर्श में चयनित 300 उत्तरदाता परिवारों के जीवन स्तर को प्रदर्शित करने वाली आवश्यक एवं विलासिता वस्तुओं में चौपहिया एवं दो पहिया वाहन, पंखे एवं कुलर, टीवी एवं फ्रिज, डीश एन्टिना, टेलिफोन एवं मोबाईल, रसोई गैस, पक्का मकान आदि का बीपीएल परिवार, निम्न आय परिवार, मध्यम आय परिवार एवं उच्च आय परिवार अनुसार विश्लेषण तालिका 2 में किया गया है।

तालिका से स्पष्ट है कि परिवहन के साधन के रूप में 26 परिवारों के पास ही कार अथवा जीप तथा 104 परिवारों के पास मोटरसाइकिल अथवा स्कूटर है जो कुल का 8.67 प्रतिशत तथा 34.6 प्रतिशत है। क्षेत्र के लगभग सभी गांवों को बिजली की सुविधा से जोड़ा गया है जिसके कारण लगभग 92 प्रतिशत परिवारों के पास पंखे एवं कुलर है। इसी प्रकार 71 प्रतिशत परिवारों के घर में टेलीविजन उपलब्ध है जिसमें 31.67 प्रतिशत परिवार डिश टीवी अथवा डीडी डायरेक्ट प्लस की सुविधा का उपयोग कर रहे है। अध्ययन क्षेत्र में दूरसंचार साधनों के रूप में 88.33 प्रतिशत परिवार

टेलिफोन अथवा मोबाईल का प्रयोग कर रहे है। तालिका से यह बात भी स्पष्ट है कि 51.67 प्रतिशत परिवारों के घर में गैंस सिलेण्डर है परन्तु सिलेण्डर का उपयोग कम कर चूल्हे पर लकड़ियों की सहायता से खाना पकाने का चलन है जबकि गैस सिलेण्डर का प्रयोग प्रायः चाय दूध बनाने अथवा वर्षा के समय अधिक किया जाता है। अध्ययन क्षेत्र में पक्के मकान बहुत ही कम देखने को मिले है।

(B) सामाजिक स्थिति के अन्तर्गत शिक्षा का स्तर

शिक्षा को परिवर्तन का सबसे बड़ा औजार माना जाता है जिसके बिना आधुनिक समाज की कल्पना नहीं की जा सकती है। शहरों से गॉवों की विकास की धारा से जोड़ना है तो गॉव में स्कूल, ग्राम पंचायत और सहकारी संगठन की स्थापना निहायत जरूरी प्रतीत होती है। इन तीनों में सबसे जरूरी है गॉवों में स्कूलों का होना जो मानव संसाधन के विकास के लिए एक आवश्यक शर्त है।

(i) साक्षरता का मिशन : वर्ष 2001 एवं 2011 के आंकड़ों पर नजर डाले तो हम देख सकते है कि जहॉ 2001 ने देश में साक्षरता की दर 64.8 प्रतिशत भी वहीं राजस्थान में 60.41 प्रतिशत थी। श्रीगंगानगर जिले की साक्षरता की दर 64.74 हनुमानगढ़ जिले की साक्षरता दर 63.05 प्रतिशत थी। इस स्थिति में बदलाव के प्रयासों के चलते 2011 में श्रीगंगानगर की साक्षरता दर 64.74 प्रतिशत से बढ़कर 69.64 प्रतिशत एवं हनुमानगढ़ जिले में साक्षरता की दर 63.05 से बढ़कर 67. 13 हो गयी। इसी इस अवधि में राजस्थान की साक्षरता दर 60.41 से बढ़कर 66.11 प्रतिशत हो गई अर्थात जहॉ दस वर्ष के समय में देश की साक्षरता दर 12.65 प्रतिशत बढ़ी वहीं राजस्थान में 8.62 प्रतिशत तथा श्रीगंगानगर की 7.5 प्रतिशत एवं हनुमानगढ़ की 6.47 प्रतिशत बढ़ी।

(ii) महिला एवं पुरूष साक्षरता : वर्ष 2011 की साक्षरता दर को देखे तो देश में कुल पुरूषों की साक्षरता दर 80.9 प्रतिशत है। इसके समानान्तर ही राजस्थान तथा हनुमानगढ़ एवं श्रीगंगानगर जिलों में है। इसके विपरित महिलाओं की साक्षरता दर देश में 64.6 प्रतिशत के लगभग है जबकि राजस्थान में यह स्थिति गिरकर 52.12 प्रतिशत तक आ गई है। हनुमानगढ़ एवं श्रीगंगानगर जिलों की महिला साक्षरता क्रमशः 55.84 एवं 59.70 प्रतिशत रही है। इस प्रकार पुरूषों की तुलना में महिलाओं की साक्षरता दर लगभग 23.94 प्रतिशत तक कम है। सामाजिक स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए महिलाओं की साक्षरता स्थिति को बेहतर करने एवं इस दिशा में बहुत अधिक कार्य करने की जरूरत महसुस होती है। साक्षरता स्थिति को तालिका 1 में दर्शाया गया है।

तालिका 2 : जनगणना 2011 के अनुसार साक्षरता दर का तुलनात्मक विवरण

देश/राज्य/जिला	साक्षरता दर (प्रतिशत)		
	कुल	पुरुष	महिला
भारत	73.00	80.90	64.60
राजस्थान	66.11	79.19	52.12
श्रीगंगानगर जिला	69.64	78.50	59.70
हनुमानगढ़ जिला	67.13	77.41	55.84

स्त्रोत : Census2011.co.in

(iii) श्रीगंगानगर एवं हनुमानगढ़ जिले की साक्षरता : प्रायः ऐसा माना जाता है कि साक्षर व्यक्ति अपने ज्ञान एवं विवेक से किसी कार्य को ज्यादा सफलतापूर्वक करते है। प्राथमिक सर्वेक्षण में साक्षर परिवार निरक्षर परिवारों के तुलना में अधिक सम्पन्न पाये गये। 300 परिवारों के प्राथमिक सर्वेक्षण में हनुमानगढ़ जिले के 70.00 प्रतिशत परिवार सामूहिक श्रेणी के साक्षर पाये गये जबकि बीपीएल परिवारों की श्रेणी में मात्र 10.10 परिवार ही साक्षर पाये गये। इसी प्रकार निम्न श्रेणी एवं मध्यम श्रेणी के परिवारों में साक्षरता दर 50 प्रतिशत एवं 88.68 प्रतिशत पायी गयी जबकि उच्च श्रेणी के सभी परिवार साक्षर पाये गये।

(iv) सर्व शिक्षा अभियान एवं मध्याह्न भोजन योजना : राजस्थान में प्रारम्भिक शिक्षा में गुणवत्ता सुधारने के लिए सर्व शिक्षा अभियान के तहत् 6–14 आयु वर्ग के बच्चों को शिक्षा के दायरे में लाने के लिए विद्यालयों में पर्याप्त संसाधनों उपलब्धता सुनिश्चित करना, लड़कियों को शिक्षा से जोड़ना, विद्यालयों में कम्प्यूटर एडेड लर्निंग कार्यक्रम के माध्यम से कम्प्यूटर शिक्षा, विद्यालयों में जरूरत अनुसार निर्माण कार्य आदि प्रयास किए गए। साथ ही राष्ट्रीय पोषाहार सहायता कार्यक्रम के अन्तर्गत राज्य के सभी जिलों में मध्यान्ह भोजन योजना का संचालन जिसके अन्तर्गत कक्षा 1 से 8 तक अध्ययन कर रहे विद्यार्थियों को प्रतिदिन निर्धारित मैन्यू के अनुसार मध्याह्न भोजन उपलब्ध करवाया जाता है।

(v) जिलों की शिक्षा व्यवस्था : दोनों जिलों की शिक्षा व्यवस्था सुदृढ़ प्रतीत होती है। आबादी क्षेत्र के मानदण्ड़ों के आधार पर प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर की शिक्षा सुविधा उपलब्ध है, अधिकांश राजकीय विद्यालयों में आधारभूत सुविधाएं उपलब्ध है तथा राज्य सरकार द्वारा पाठ्यपुस्तकों का वितरण प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर पर निःशुल्क किया जाता है। पिछले दस वर्षो में हनुमानगढ़ एवं श्रीगंगानगर जिले के ग्रामीण क्षेत्र में शिक्षा की स्थिति में महत्वपूर्ण बदलाव हुए है। ग्रामीणों में शिक्षा के प्रति उत्साह बढ़ा है। सर्वेक्षण में पाया कि पहले ग्रामीण क्षेत्रों में बहुत कम विद्यार्थी उच्च शिक्षा प्राप्त थे परन्तु वर्तमान ग्रामीणों का उच्च शिक्षा के प्रति उत्साह बढ़ रहा है। सामान्य शिक्षा के साथ साथ तकनीकी एवं व्यवसायिक शिक्षा के प्रति ग्रामीण जागरूक हो रहे है।

(C) सांख्यिकीय परीक्षण

हनुमानगढ़ एवं श्रीगंगानगर जिले के उतरदाता परिवारों द्वारा दी जानकारी के आधार आय स्तर बढ़ने के पश्चात् उनके जीवन स्तर में परिवर्तन के आंकड़ों को तालिका 3 में दर्शाया गया है।

तालिका 3 : आय स्तर बढ़ने के पश्चात् उनके जीवन स्तर में परिवर्तन की स्थिति

उत्तरदाता परिवारों की श्रेणी	बीपीएल परिवार	निम्न आय वर्ग परिवार	मध्यम आय वर्ग परिवार	उच्च आय वर्ग परिवार	कुल परिवार
पर्याप्त सुधार	0	15	65	10	90
सामान्य सुधार	15	20	85	47	167
विशेष सुधार नही	10	10	8	5	33
असंमजस स्थिति	5	3	2	0	10
योग	30	48	160	62	300

*20 प्रतिशत अथवा इससे अधिक वृद्धि को सार्थक एवं इससे कम वृद्धि को सामान्य वृद्धि माना गया है।

प्राथमिक समंकों के विश्लेषण में 35 प्रतिशत उत्तरदाता परिवारों का मानना था कि उनकी सम्पूर्ण आय घरेलू आवश्यकताओं को पूरा करने में व्यय हो जाती है जिससे उनकी आर्थिक स्थिति में कोई विशेष परिवर्तन नही हुआ है। कुल 10 परिवारों ने जीवन स्तर में परिवर्तन के बारे में असमंजस की स्थिति प्रकट की है। हालांकि इस क्षेत्र के लगभग सभी उत्तरदाता परिवारों में इस बात को स्वीकार किया है कि रोजगार के साधन बढ़ने से उनकी आय बढ़ी है परन्तु उसके साथ महंगाई भी बढ़ी है। परिवारों के बच्चे शिक्षा ग्रहण करने लगे है तथा आत्म निर्भरता हेतु विभिन्न कार्य भी करने लगे है।

परिवारों के आय स्तर बढ़ने और उनके जीवन स्तर में परिवर्तन के मध्य साहचर्य के लिए काई वर्ग (χ^2) परीक्षण का प्रयोग किया गया है। इस परीक्षण हेतु अवलोकित आवृति (f_0) एवं प्रत्याशित आवृति (fe) का अन्तर ($f_0 - fe$) निकाला जाता है। इसके पश्चात् अन्तर वर्ग को प्रत्याशित आवृति से विभाजित कर मूल्यों को जोड़ लिया जाता है। χ^2 परीक्षण हेतु निम्न शून्य परिकल्पना बनाई गई है।

शून्य परिकल्पना (H_0) : श्रीगंगानगर एवं हनुमानगढ़ जिलों के मानव संसाधन का राजस्थान के आर्थिक विकास में कोई योगदान नही है। यदि χ^2 का परिकलित मान χ^2 के सारणी मान से अधिक पाया जाता है तो उक्त शून्य परिकल्पना को अस्वीकर करेंगें। इसके विपरित यदि χ^2 का परिकलित मान χ^2 के सारणी मान से कम पाया जाता है तो उक्त शून्य परिकल्पना को स्वीकर करेंगें। अतः प्राप्त आंकड़ों से χ^2 का परिकलित मान ज्ञात करने के लिए निम्न सारणी बनाई गई है।

तालिका 4 : काई वर्ग परीक्षण (χ^2) की गणना

f_0	f_e	$f_0 - f_e$	$(f_0 - f_e)^2$	$(f_0 - f_e)^2 / f_e$
0	9.0	−9.0	81.0	9.0
15	16.7	−1.7	2.8	0.2
10	3.3	6.7	44.8	13.6
5	1.0	4.0	16.0	16.0
15	14.4	0.6	0.3	0.0
20	26.7	−6.7	44.8	1.7
10	5.3	4.7	22.0	4.2
3	1.6	1.4	1.9	1.2
65	48.0	17.0	289.0	6.0
85	89.1	−4.1	16.8	0.2
8	17.6	−9.6	92.1	5.2
2	5.3	−3.3	10.8	2.1
10	18.0	−8.0	64.0	3.6
47	34.5	12.5	156.2	4.5
5	6.8	−1.8	3.2	0.5
0	2.1	−2.1	4.4	2.1
			Calculated value $\chi^2 = \sum [(fo - fe)^2 / fe] =$	70.00

काई वर्ग परीक्षण की गणना में x^2 का परिकलित मान (Calculated value x^2) = $\sum [(fo - fe)^2 / fe]$ = 70.00 प्राप्त हुआ है। x^2 का सारणी मान (Table value x^2) हेतु स्वातंत्र्यकोटियों की संख्या (df) = (r-1) (c-1) सूत्र द्वारा 9 df प्राप्त होगा। 9 df एवं 5 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर x^2 का सारणी मान ($x^2_{0.05}$) 16.919 है। यहॉ x^2 का परिकलित मान है। x^2 का सारणी मान से अधिक पाया गया है अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकार की जाएगी। दूसरे शब्दों में कह सकते है कि राजस्थान के हनुमानगढ़ एवं श्रीगंगानगर जिलों के मानव संसाधन का आर्थिक विकास में सार्थक योगदान माना जाना चाहिए।

5. निष्कर्ष

उपरोक्त विश्लेषण से कहा जा सकता है कि शिक्षा की दृष्टि से श्रीगंगानगर एवं हनुमानगढ़ जिलों की स्थिति राजस्थान में सुदृढ़ है और राज्य के अन्य जिलों की अपेक्षा बेहतर है। यद्यपि शिक्षा के प्रति बढ़ती जागरूकता एवं सरकारी प्रयासों से पुरूषों के साथ–साथ अब धीरे–धीरे महिला साक्षरता भी बढ़ रही है फिर भी महिला शिक्षा को तेजी से बढ़ाने की आवश्यकता महसुस की गई है। काई वर्ग परीक्षण से ज्ञात हुआ कि श्रीगंगानगर एवं हनुमानगढ़ जिलों के मानव संसाधनों ने राजस्थान के आर्थिक विकास को बढ़ावा दिया है।

6. सन्दर्भ

1. आर्थिक सर्वेक्षण 2022, आर्थिक कार्य विभाग, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।
2. आर्थिक समीक्षा 2022, आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय, आयोजना विभाग, राजस्थान, जयपुर।
3. जिला सांख्यिकी रुपरेखा 2021, जिला सांख्यिकी विभाग, श्रीगंगानगर एवं हनुमानगढ़ जिला।
4. Web Site : http://sriganganagar.rajasthan.gov.in
5. Web Site : http://hanumangarh.rajasthan.gov.in